Topic : Personality (व्यक्तित्व)

व्यक्तित्व एक जटिल सम्प्रत्यय है, जिसकी एक परिभाषा ऐसी नहीं है, जिसमें सभी मनोवैज्ञानिक सहमत है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को दो भिन्न इकाईयों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के बाहरी पक्ष जैसे- शारीरिक रचना, रूपरेखा, रंगरूप आदि को ध्यान में रखकर और कुछ ने व्यक्ति के आन्तरिक पक्ष जैसे स्वभाव, मानसिक रचना, बौद्धिक श्रेष्ठता, नैतिकता आदि को ध्यान में रखकर व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

व्यक्तित्व शब्द की उत्पति लैटिन भाषा शब्द Persona से बना है जिसका अर्थ नकाब (Mask) से होता है जिसे नायक (actor) नाटक करते समय पहनते है। इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुये व्यक्तित्व को बाहरी वेशभूषा तथा दिखावे के आधार पर परिभाषित किया गया है। ऐसी परिभाषायें 49 थी, जिनका विश्लेषण करने के बाद आलपोर्ट (Allport 1934) ने अपनी 50वीं परिभाषा दी।

"व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों की गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के अपूर्व समायोजन को निश्चित करता है।"

"Personality is the dynamic organization within the individual of those psychophysical system that determine his unique adjustment of his environment" - Allport 1937

"Personality is the entire mental organization of a human being" - Warren and others

"व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निश्चित करता है।" - Eysenck 1953

आइजेन्क ने आलपोर्ट के ही समान व्यक्तित्व को परिभाषित करने में व्यक्तित्व के भीतरी गुणों तथा बाहरी गुणों यानी व्यवहार को

Scanned with CamScanner

सम्मिलित किया है परन्तु भीतरी गुणों पर अधिक बल डाला है। वाल्टर मिशेल (Walter Mischel) ने हाल ही में एक ऐसी परिभाषा दी है जो आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के बीच अधिक लोकप्रिय होती जा रही है।

" Personality usually refers to the distinctive patterns of behaviour (including thoughts and emotions) that characterize each individual's adaptation to the situations of his or her life." Walter Mischel 1981

Nature of Personality

① Psychophysical system :- व्यक्तित्व एक ऐसा तन्त्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते हैं। यह तंत्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आपस में अन्तःक्रिया करते हैं। जैसे - संवेग, ज्ञानशक्ति, चित्तप्रकृति आदि मानसिक गुण का शारीरिक आधार ग्रन्थीय प्रक्रियाएं एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएं हैं।

② Dynamic organization :- गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र में भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत आदि एक-दूसरे से इस तरह सम्बन्धित होकर संगठित हैं कि उन्हें एक दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है।

③ Determination of Unique adjustment to environment :- प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार वातावरण में अपने-अपने ढंग का अपूर्व होता है। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार विचार, होने वाले संवेग आदि अपूर्व होता है जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन करने हुए भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है। 1961 में Allport ने अपनी परिभाषा में "Unique adjustment to his environment"

Scanned with CamScanner

की जगह पर "characteristic behaviour and thoughts." को सम्मिलित किया गया। इसका उद्देश्य यह बतलाना था कि व्यक्ति का व्यवहार मात्र अनुकरणी ही नहीं होता बल्कि कथनीय भी होता है।

Determinants of Personality

व्यक्तित्व के निर्धारक से तात्पर्य कुछ ऐसे कारकों से होता है जिससे व्यक्ति विकास प्रभावित होता है। कुछ कारक ऐसे हैं, जिनका सम्बन्ध व्यक्ति के आनुवंशिकता या जैविक प्रक्रियाओं से होते हैं, इन्हें जैविक कारक (biological determinants) कहा जाता है। कुछ ऐसे कारक है, जिनका सम्बन्ध वातावरण से होता है। इन्हें पर्यावरणी कारक कहा जाता है। इन दोनों तरह के कारकों की व्याख्या निम्नांकित है—

Biological factors

① Physique and physical health :- शारीरिक संरचना से तात्पर्य प्राणी के शरीर के कद, रंग, गठन, मानसिक शीलगुण, सामाजिक गुण, शारीरिक शीलगुण एवं स्वास्थ्य आदि से होता है। जिस व्यक्ति की शारीरिक संरचना सुडौल होती है, उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। व्यक्ति के शारीरिक संरचना एवं शीलगुणों का सम्बन्ध वंशानुगत होता है। व्यक्ति को यह गुण अपने माता-पिता एवं पूर्वजों से प्राप्त होता है।

② Body chemistry and endocrine glands :- प्रायः देखा जाता है, कि कभी-2 हम लोग बहुत सक्रिय हो जाते है तथा कभी-2 बहुत ही निष्क्रिय और साथ ही साथ विषादी भी हो जाते हैं। इसका कारण हमारे शरीर में रसायनिक परिवर्तन होते हैं। जिसका नियन्त्रण कुछ glands द्वारा की जाती है। मानव शरीर में दो तरह की ग्रन्थियां होती हैं —

Glands

- Exocrine gland (duct gland)
  - Sweat gland
  - Tear gland
- Endocrine gland (ductless)
  - Pituitary gland
  - Adrenal gland
  - Thyroid gland
  - Sex gland
  - Pancreas

Scanned with CamScanner

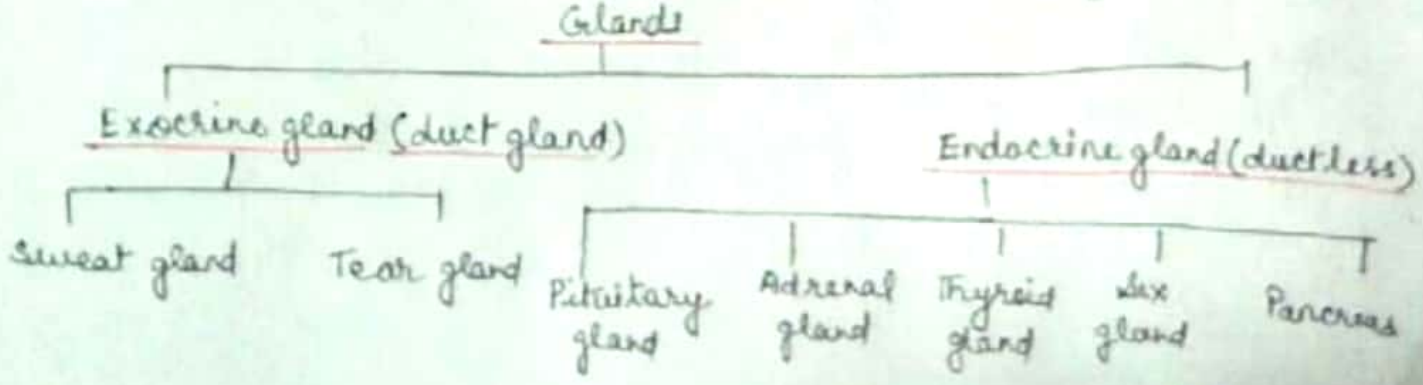

बहिस्रावी ग्रन्थि का महत्व व्यक्तित्व के निर्धारक के रूप में कुछ भी नहीं है, क्योंकि इन ग्रन्थियों का स्राव एक विशेष नली द्वारा शरीर के बाहर चला जाता है जबकि अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का महत्व व्यक्तित्व के निश्चित निर्धारक के रूप में काफी अधिक है। इससे निकलने वाले स्रावों को हारमोन्स कहा जाता है जो सीधे खून में मिल जाता है और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है।

③ Nervous System :- व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों में स्नायु मंडल का स्थान प्रमुख है। जिन व्यक्तियों का स्नायु मंडल अधिक विकसित तथा जटिल होता है, उसकी बुद्धि अधिक होती है तथा उसमें परिस्थिति के साथ समायोजन करने की क्षमता भी अधिक होती है। ऐसे व्यक्तियों के प्रति समाज के लोगों की मनोवृत्ति favourable होती है।

Environmental factors

व्यक्तित्व का विकास सिर्फ जैविक कारकों द्वारा ही प्रभावित नहीं होता है बल्कि वातावरण से संबंधित कारकों से भी प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिकों ने पर्यावरणी कारकों को निम्नांकित तीन भागों में बांटा है:—

① Social Factors :- प्रत्येक व्यक्ति एक समाज में रहता है। अतः समाज की परिस्थितियों जैसे- सामाजिक समूह, सामाजिक संस्थानों, परिवार, माता-पिता, पास-पड़ोस, स्कूल आदि का प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर काफी पड़ता है। कुछ माता पिता अपने बच्चों को जरूरत से ज्यादा दुलार-प्यार करते हैं, कुछ काफी सख्ती से पेश आते हैं और कुछ समय के अभाव के कारण अपने बच्चों को उचित मात्रा में दुलार-प्यार नहीं दे पाते। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि अधिक प्यार से बच्चों में असुरक्षा की भावना, बचपनहट आदि विकसित होता है। सख्ती से पेश आने पर बच्चों में अधीनस्थता का गुण विकसित हो जाता है।

Scanned with CamScanner

② **Cultural factors:-** व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति का भी योगदान होता है। समाज के रीति-रिवाज, आदतों, परम्पराओं, रहन-सहन, तौर-तरीके आदि का व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव पड़ता है। एक भारतीय महिला बहुत दिनों के बाद किसी परिचित से मिलने पर दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करती है, परन्तु एक अमेरिकन महिला एसे व्यक्ति से हाथ मिलाकर या चुम्बन लेकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करती है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण व्यक्ति की बुद्धि एवं सर्जनात्मकता भी भिन्न होती है।

③ **Economic factors:-** व्यक्तित्व के शीलगुणों के निर्माण में परिवार की सामाजिक स्थिति का ही नहीं बल्कि आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से व्यक्तित्व के विकास तथा शीलगुणों के निर्माण पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। गरीब परिवार के छात्रों में हीनता का भाव, सांवेगिक अस्थिरता आदि औसत परिवार के छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है, ऐसा स्टैगनर (Stagner 1935) के अध्ययनों में पाया गया। Francis and Fillmore 1935 ने अपने अध्ययनों में पाया कि गरीब परिवार के बच्चों एवं धनी परिवार के बच्चों में सांवेगिक अभियोजन के शीलगुण में कोई अन्तर नही पाया गया था।

Scanned with CamScanner